International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 4, April 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

# बालकृष्ण भट्टः एक श्रेष्ठ निबन्धकार

**डॉ० सुनीता खुराना**
श्यामलालकॉलेज :सांध्य
दिल्लीविश्वविद्यालय

साहित्य में निबन्ध विधा का उद्भव और विकास भारतेंदु युग में हुआ। जनता को जागृत करने में, नवचेतना का प्रसार करने में निबन्ध सर्वश्रेष्ठ माध्यम सिद्ध हुए। इसीलिए भारतेंदु युग में निबन्ध साहित्य की सर्वाधिक रचना हुई। भारतेंदु युग के साहित्यकार पत्रकार भी थे। "कवि वचनसुधा" हरिश्चंद्र मैगज़ीन",हिंदी प्रदीप"", "ब्राह्मण", "आनंद कादम्बिनी" इस युग की मुख्य पत्रपत्रिकाएं थीं। साहित्यकारों ने इन पत्रपत्रिकाओं में निबन्ध, कविता आदि के माध्यम से जन–जागरण के प्रयास किए।

बालकृष्ण भट्ट भारतेंदु युग के प्रतिनिधि निबन्धकार हैं। उनके निबन्धों में जीवन के व्यापक अनुभवों का निचोड़ देखने को मिलता है। गंभीरता और व्यंग्य का पुट उनके निबन्धों की विशेषता है। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनके निबन्धों में तत्कालीन परिवेश साकार हो उठा है। "हिंदी प्रदीप" पत्र का कुशलता से संपादन करने वाले भट्ट जी को रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी का एडिसन कहा।

प्रत्येक युग का साहित्य युगीन परिवेश से प्रभावित होता है। 1844 में जन्मे भट्टजी के समय में भारत अंग्रेजी के अधीन था। लार्ड डलहौज़ी शेष बचे राज्यों को अपने अधिकार क्षेत्र में लाने की कोशिश में था जिससे जनता में असंतोष पनपने लगा था। 1857 में इस असन्तोष की व्यापक अभिव्यक्ति हुई। शासन का अधिकार ईस्ट इण्डिया कंपनी से ब्रिटिश शासन के हाथ में आ गया। भारतीय अर्थव्यवस्था सर्वनाश के कगार पर पहुंच चुकी थी। अंग्रेजी औद्योगिक क्रांतिकीसभी स्थितियां भट्टजीके निबन्धों में स्पष्ट रूप से व्यक्त हुई हैं। "इंडिया को समझकर फिर उठने की क्या अब भी आशा है" निबन्ध में वे लिखते हैं:–

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 8 Issue 4, April 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"दस वर्ष पहले जो था वो आज नहीं है। दस वर्ष पहले जिस घर में आनंद कोलाहल मचा रहता था आज वह घर गुपचुप दुखित दशा से अपना दिन काट रहा है फिर एक–दो पर की ऐसी दशा हो सो नहीं देश का देश दरिद्रता के कारण बेकलीऔर बेचैनी से वीभत्स का थियेटर बनता जाता है।"[1]

राजनीतिक निबन्धों में भट्टजी ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध निर्भीक आलोचना की। ब्रिटिश शासन द्वारा किए जा रहे अन्याय और जुल्मों के विरुद्ध इनका आक्रोश स्पष्ट दिखाई देता है।विदेश की दरिद्रता और बेरोज़गारी पर कठोर प्रहार करते हैं–

"हम क्यों न कहें हमारे बापदादाभलि–भांति रंजेपुंजे थे और हम इस अंग्रेज़ी राज्य में पेटभर अन्न भी नहीं पाते। यह बात हमारे शासनकत्ताओं के काल को प्यारी न लगती हो तो क्या किया जाए। जो बात सच है वह कही जाएगी कि अवश्य यह सब इनके राजप्रबन्ध का दोष है।"[2]

अंग्रेज़ी सरकार द्वारा लगाए गए टैक्स, पुलिस के अत्याचारों, उर्दू के प्रति पक्षपात की इन्होंने निन्दा की है। करों का विरोध करते हुए वे कहते हैं:–

"नोन पर कर लगे, दाल पर लगे, चावल पर कर लगे, गेहूं पर कर लगे, खेत पर कर लगे, खलिहान पर कर लगे, जहां तक चाहें कर बढ़ाते जाएं, कोई हाथ पकड़ने वाला ही नहीं है।"[3]

अपने निबन्धोंमें भारतवासियों को विदेशी वस्तुओं के प्रति मोह त्यागने की बात कहते हैं। इंगलैण्ड में लिबरल पार्टी की सत्ता आने पर "लिबरलों के लिबरलपन कीसब कलई खुल गई" निबन्ध मेंपोलखोल कर रख देते हैं। "कृषि कार्य की दुर्गति" में कहतेहैं कि महारानी विक्टोरिया से किसी भी प्रकार की उम्मीद रखना बेकार है।

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 8 Issue 4, April 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निबन्ध में निबन्धकार का व्यक्तित्व प्रतिबिम्बित होता है। भट्टजी के निबन्धों से उनका व्यक्तित्वझांकतादिखाई देता है। उनका व्यक्तित्वअपनी स्वच्छंदता में भी गंभीरता से युक्त है। हास्य–विनोदपूर्ण निबन्धों में भी शालीनता दिखाई देती है। गंभीर होते हुए भी उनमें पाठकों के प्रति सहज आत्मीयता का भाव सदैव विद्यमान रहता है। कहावतों और मुहावरों का प्रयोग उन्हें अन्य निबन्धकारों से पृथक करता है। "बात" निबन्ध में वे लिखते हैं:–

"बात क्या है? बात किसे कहते हैं? यह तो सबकोई जानते हैं कि यह शब्द हमारे ही देश का है। हमने इसे किसी विदेशी से मंगनी नहीं मांगा किंतु शुद्ध हिंदी और वार्ता का अपभ्रंश है। बात हमारी बात है, हमारे देश की बात है। बात संसार में बड़ी बात है।"[4]

उनके निबन्धों में राजनीतिक विचारों के साथ–साथ समाज के प्रति चिंता भी दिखाई देतीहै।वे समाज में व्याप्त रूढ़ियों का विरोध करते हैं। उस समय जब अनेक विद्वान संयुक्त परिवार के पक्षधर थे, भट्टजी ने संयुक्त परिवार का विरोध किया था। उनके पैने व्यंग्यबाण हिंदू समाज की कुरीतियों की कड़ी आलोचना करते हैं। "हम ही सबसे बुरे हैं।" निबन्ध में वे धार्मिक कट्टरता की आलोचना करते हैं:–

"धिक् मज़हबी सरगर्मी। इसी का नाम है कि शैव वैष्णव को देख खाक हों और वैष्णव शैव को देख जलें। खैर आपस ही में यह एक–एक फिर के खूब सरहुतरखते हों सो भी नहीं।"

उस समय देश की सामाजिक स्थिति अच्छी नहीं थी। जनसमुदाय परस्पर फूट और वैरभाव से ग्रस्त था। पत्र–पत्रिकाओं में देश की दुरव्यवस्ता को लेकर लेलिखे जा रहे थे। अनमेल विवाह, पर्दाप्रथा, समुद्र यात्रा निषेध जैसी अनेक कुरीतियां समाज में प्रचलित थीं। इनको लेकर भट्टजी अपने निबन्धों द्वारा जनजागृति का प्रसार करने की

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 8 Issue 4, April 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

चेष्टा कर रहे थे। उन्होंने "हमारी ललनाओं की हीन दशा", "नवयुवकों में गांभीर्य आवश्यक"जैसे निबन्धों में अनेक निदान भी सुझाए। समाज में विषमताएं धार्मिक असहिष्णुता अपनी चरम सीमा पर थी। "बाल्यविवाह भयंकर विपत्ति क्यों कर छुटकारा पावें" निबन्ध में वे बाल विवाह जैसी कुरीति के विरोध में लिखते हैं:–

"विचारशील पुरुष कहते हैं कि हमारे देश में बाल्य विवाह और उसके साथ रीत करतूत में बहुत सा बेजाँखर्चकरने की जो टेंवपड़ गई है इससे देश की बड़ी दुर्गति हो रही है इसलिए इसमें अवश्य संशोधन उचित है।"[5]

भट्टजी ने मनुष्य के सूक्ष्म भावों को भी अपने निबन्धों का विषय बताया है। "प्रेम और भक्ति", "नीयत", "कामयाबी", "विश्वास" आदि उनके मनोविश्लेषणात्मक निबन्ध हैं। वे साहित्य को शाश्वत न मानकर परिवर्तनशील मानते हैं क्योंकि साहित्य जीवन से जुड़ा है और जीवन परिवर्तनशील है। "साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है" में उन्होंने साहित्य और कालके संबंध को अन्योन्याश्रित माना है। "सच्ची कविता" निबन्ध में उन्होंने कविता संबंधी विचार प्रकट किए हैं। वे लोककविता को साहित्यिक कविता के बराबर दर्जा देते हैं। भट्टजी ने यथार्थ की कठोर समस्याओं का विश्लेषण तो किया ही है प्रकृति के कोमल संसार को भी अनदेखा नहीं किया है। "चंद्रोदय" निबन्ध में वे लिखते हैं–"दूइज से बढ़ते–बढ़ते यह चंद्र पूर्णता को पहुंचा। यह पूनो का पूरा चांद किसके मन को न भाता होगा। यह गोल–गोल प्रकाश का पिंड देख भांति भांति की कल्पनाएं मन में उदय होती हैं कि क्या यह निशा अभिसारिका के मुख देखने की आरसी है, या उसके कान का कुंडल अथवा फूल है; या रजनी रमणी के लिलार पर बुक्के का सफेद तिलक है अथवा स्वच्छ नीले आकाश में यह चंद्र मानो त्रिनेत्र शिव की जटा में चमकता हुआ कुंद के सफेद फूलों का गुच्छा है।"[6]

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 8 Issue 4, April 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भट्टजी ने भाषा संबंधी निबन्धों में भाषा को लेकर अपने विचार प्रकट किए हैं। भाषा और साहित्य से जुड़ी समस्याओं पर चिंतन–मनन करते हुए समाधान भी प्रस्तुत किए हैं। अंग्रेज़ी सरकार द्वारा हिंदी भाषा की उपेक्षा और अंग्रेज़ी और फ़ारसी भाषाको महत्व देने का विरोध भट्टजी अपने निबन्धों में करते हैं। वे इस बात से बड़े खिन्न थे कि भारतीय संस्कृत और हिंदी को छोड़ अंग्रेज़ी को महत्व देने लगे हैं। वे मानते थे कि हिंदी की प्रगति संस्कृत से अभिन्न रूप से जुड़ी है। उनके अनुसार इससे हिंदी का क्षेत्र व्यापक और समृद्ध होगा। वे परिवर्तन में, विकास में विश्वास करते थे। "भाषाओं का परिवर्तन" निबन्ध में उन्होंने भाषा संबंधी गहन चिंतन–मनन किया है।

विचारप्रधान, भावप्रधान निबन्धों के अतिरिक्त उन्होंने शैलीप्रधान निबन्धों की भी रचना की। "हुक्का स्तवम्" निबन्ध में व्यंग्यपूर्ण शैली के दर्शन होते हैं। उस समय परिहासपूर्ण, व्यंग्यपूर्ण शैली में निबन्ध अधिक लिखे जा रहे थे। अंग्रेज़ों की शासन–प्रणाली पर व्यंग्यपूर्ण भाषा में लिखा है। इस शैली द्वारा वे समाज को सुधारने का प्रयास करते हैं। मुहावरा शैली में केवल मुहावरों के ही आधार पर साहित्यिक निबन्ध लिखे हैं। बिंबात्मक शैली द्वारा वे शब्दों द्वारा चित्र पाठक के सम्मुख रख देते हैं। "सौ अजान एक सुजान" ऐसा ही निबन्ध है।

निष्कर्षतः बालकृष्ण भट्ट भारतेंदु युग के श्रेष्ठ निबंधकार हैं। अनेक परवर्ती लेखकों ने उनसे प्रेरणा ग्रहण की है। उन्होंने राजनीतिक, सामाजिक विषयों पर विचारक के रूप में चिंतन–मनन किया और समाज में फैली कुरीतियों पर कठोर प्रहार भी किए। हिंदी निबन्ध साहित्य को उनका योगदान अप्रतिम है। उन्होंने हिंदी गद्यशैली को एक नवीन रूप प्रदान किया। विचारों की सम्पन्नता और शैली की विविधता के कारण भट्टजी हिंदी साहित्य जगत में श्रेष्ठ स्थान के अधिकारी हैं। श्रीधरपाठक लिखते हैं–

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 8 Issue 4, April 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"जीवन तव अति धन्य सबहिं विधि अहो पूज्यवर।
अनुदिन अनुकरणीय चरित पावन प्रशस्यतर।।

× × × ×

धनि हिंदी प्रदीप प्रकाशि जग मूरखता तम त्रास हर।
तवपुण्य नाम प्रिय भट्ट श्री बालकृष्ण जग में अमर।।"

## संदर्भ

1. बालकृष्ण भट्ट : हिंदी प्रदीपः जनवरी 1881, उद्धृतः बालकृष्ण भट्ट रचनावली भाग 1, संपादक—समीर कुमार पाठक, पृष्ठ 159
2. हिंदी प्रदीपः दिसम्बर 1978
3. हिंदी प्रदीपः जून 1886
4. हिंदी प्रदीप : जून 1883
5. बालकृष्ण भट्ट रचनावली भाग 4, संपादक—समीरकुमार पाठक, पृष्ठ 133
6. वही, पृष्ठ 294